शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के रचना संसार में आंचलिकता

सोनिया राठी (शोधार्थी)
जैन विश्वविद्यालय
बेंगलोर, कर्नाटक, भारत

शोध संक्षेप

आंचलिक उपन्यासकार के तौर पर विख्यात हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' की रचनाओं में गहरी लयबद्धता है और इसमें प्रकृति की आवाज समाहित है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का देश के आंचलिक कथाकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान है। इस लोक में ऐसे भी साहित्यकार पैदा हुए हैं, जिन्होंने पाठकों का दिल अपनी रचनाओं के जीवंतता से जीता है, इनमें से एक हैं, फणीश्वरनाथ 'रेणु'। प्रस्तुत शोध पत्र में फणीश्वर नाथ रेणु के साहित्य में आंचलिकता के स्वर का अध्ययन किया गया है।

आंचलिकता से आशय

आंचलिकता से तात्पर्य है कि किसी उपन्यास में किसी क्षेत्र के शब्दों और परम्पराओं का बहुतायत में पाया जाना। 'मैला आँचल' उपन्यास के द्वारा फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने पूरे भारत के ग्रामीण जीवन का चित्रण करने की कोशिश की है। इस अंचल विशेष में वहां की संस्कृति, पेड़-पौधे, भाषा, रहन-सहन, आचार-विचार, पर्व, त्यौहार, परम्पराएं, रीति-रिवाज कहानी के विषय वस्तु होते हैं। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का आंचलिक परिवेश स्थानीय न होकर सार्वदेशीय है। इसमें ग्रामांचलों की समस्त धड़कनें कैद हैं। 'मैला आँचल' को गोदान के बाद हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास का कथानक पूर्णिया जिले के एक गाँव मेरीगंज का है। जैसा कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने भूमिका में ही कहा है कि यह एक आंचलिक उपन्यास है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' नागार्जुन, इलाश्चन्द्र जोशी, शैलेश मटियानी जैसे आंचलिक कथाकारों की तुलना में भाषा-भाव एवं शिल्प की क्षेत्र से श्रेष्ठ आंचलिक कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। विशेषतः अपने बिहार अंचल के परिप्रेक्ष्य में उनका स्थान निःसन्देह सर्वश्रेष्ठ ही माना जा सकता है। आंचलिकता के संबंध में लेखकों, पाठकों, विद्वानों एवं आलोचकों में एक धारणा यह भी प्रचलित है कि नगरेतर जीवन पर लिखे गए उपन्यास जिस में स्थानीय रंग भरा हुआ हो और जिनकी भाषा भी स्थान विशेष की बोली की शब्दावली से भरी हो वही आंचलिक उपन्यास है। किन्तु सत्य यह है कि स्थानीय रंग कथावस्तु की मूल संवेदना या तत्त्व नहीं बल्कि वह उस में रूप, रंग, भाषा, वातावरण, आचार-व्यवहार का स्पर्श देने वाला तत्त्व हो सकता है। या यू कहें कि यह किसी कृति की विशेषता भले ही हो सकती है। अतः स्थानीय रंग या स्थानीय बोली ही आंचलिकता नहीं है।

प्रस्तावना

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च, 1921 को बिहार के पूर्णिया जिले, हिंगना औराही नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता आर्यसमाजी थे। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा फारबिसगंज से पूर्ण की। वहीं से मैट्रिकुलेशन भी किया। उन्होंने

बनारस के टी.एन.जे. कॉलेज में प्रवेश लिया। वे साहित्य के साथ-साथ राजनीति में भी काफी रुचि रखते थे। सन 1950 में उन्होंने नेपाल के राजा के खिलाफ चलाये जाने वाले शासन के विरोध में सशस्त्र क्रान्ति में भाग लिया था। फणीश्वरनाथ 'रेणु' की रचनाओं में 'मैला आंचल', 'परती परिकथा', 'दीर्घतपा जुलूस', 'कितने चैराहे', 'हाथ का जस' प्रमुख हैं। कहानियों में ग्राम्यजीवन की आत्मीयता अपने पूर्ण भाषायी परिवेश के साथ उजागर हो उठती है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' की औपन्यासिक आंचलिक कला भी अत्यन्त उच्चकोटि की है।

'मैला आंचल' उपन्यास में 1947 के भारतीय ग्रामीण जनजीवन का वह विविध परिवेश है, जहां के पात्र 'गोदान' की तरह पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का समय प्रेमचंद के ठीक बाद का था। तब तक एक तरह के आभिजात्यबोध का साहित्य पर कब्जा हो चुका था। भाषा शब्दों और प्रयोगों के खेल में फंसने लगी थी और यह कोई अनहोनी भी न थी। स्वतंत्रता के बाद नया जीवन था, प्रगति के नए-नए सपने थे। ऐसे में सबसे आसान था लीक पर चलकर शहरी और मध्यवर्गीय जीवन की कहानियां लिखते जाना, पर फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपने भीतर से निकलती उस आवाज को सुना, आजादी के बाद दम तोड़ते हुए गांवों की कराह सुनी और अपने लिए रास्ता चुन लिया। जब हम पढ़ी-सुनी चीजों को वैसे का वैसा ही रच जाते हैं तो वह नकल होती है। जब हम सारे संचित को किसी खास परिदृश्य में रखकर सोचते है। उसे मिलाकर नया बनाते हैं तो वह कुछ अलग सा होता है। गांव वही थे, गांव वाले भी बहुत हद तक वही, पर फणीश्वरनाथ 'रेणु' के अनुभव यहां अपने थे। यहां अगर प्रेमचंद की रचनाओं में दिखने वाला मोह भंग था तो साथ ही विरासत को थामे रहने की उदासी में भी लोक धुनों और लोक गीतों को गुनगुनाने, राह खोजने वाली जीवटता भी थी।

हिंदी साहित्य में फणीश्वरनाथ 'रेणु' की पहचान एक कालजयी रचनाकार के रूप में है। अपने पहले उपन्यास 'मैला आँचल' 1954 से ही इन्होंने हिंदी कथा साहित्य को एक नई दिशा दी। इस उपन्यास के प्रकाशित होते ही हिंदी कथा साहित्य में आंचलिकता की नींव पड़ी।

रेणु का कथा संसार

फणीश्वरनाथ 'रेणु' सम्पूर्ण जीवन राजनीति से साहित्य और साहित्य से राजनीति की ओर एक शोधक यात्री की तरह यात्रा करते रहे। इनकी इस यात्रा को अकारण या भटकावपूर्ण नहीं कहा जा सकता बल्कि यह सामाजिक बदलाव के प्रति उत्कट अभिलाषा और तीव्र छटपटाहट को दिखाता है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का सम्पूर्ण साहित्य राजनीति की मजबूत बुनियाद पर स्थित है। इन्होंने सामाजिक बदलाव में साहित्य की भूमिका को कभी राजनीति से कमतर नहीं माना। फणीश्वरनाथ 'रेणु' की पक्षधरता पूरी तरह से शोषितों के प्रति है इस बात का पता उनके द्वारा लिखे गए अन्य साहित्य-रूपों की तुलना में रिपोर्ताज में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इन्होंने 1936 के आसपास से कहानी लेखन की शुरूआत की। उस समय उनकी कुछ अपरिपक्व कहानियाँ प्रकाशित भी हुई थीं, लेकिन 1942 के आंदोलन में गिरफ्तार होने के बाद जब वे 1944 में जेल से मुक्त हुए, तब घर लौटने पर उन्होंने 'बटबाबा' नामक पहली परिपक्व कहानी लिखी। 'बटबाबा' 'साप्ताहिक विश्वमित्र' के 27 अगस्त 1944 के अंक में प्रकाशित हुई। इनकी दूसरी कहानी 'पहलवान की ढोलक' 11 दिसम्बर 1944

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

को 'साप्ताहिक विश्वमित्र' में छपी। 1972 में अपनी अंतिम कहानी 'भित्तिचित्र की मयूरी' लिखी। उनकी अब तक उपलब्ध कहानियों की संख्या 63 है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' को जितनी प्रसिद्धि उपन्यासों से मिली, उतनी ही प्रसिद्धि उनको उनकी कहानियों से भी मिली। 'ठुमरी', 'अगिनखोर', 'आदिम रात्रि की महक', 'एक श्रावणी दोपहरी की धूप', 'अच्छे आदमी', 'सम्पूर्ण कहानियां', आदि उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। लेकिन प्रमुख रूप से वे एक आंचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हुए।

नन्ददुलारे वाजपेयी ने उनकी प्रतिभा से चकित होकर लिखा था कि 'इतना प्रभावशाली लेखक बहुत दिनों बाद पैदा हुआ है।' फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने हिन्दी कहानी में सर्वथा एक नयी शैली का सूत्रपात किया, जिसे आंचलिक शैली के नाम से जाना जाता है। यदि आंचलिकता की परिभाषा को बड़ा किया जाए तो गाँव की घटनाएं भी इस दायरे में आ जाएंगी। किसी शुभ अवसर पर लोगों को भोज देने के समय बड़ी जातियों का छोटी जातियों के साथ खाने से इंकार करना, फसल कटाई-बुवाई के समय लोकगीत गाना, अखाड़ा होना, वाद-विवादों के निपटारे के लिए पंचायत बुलाना आदि को भी आंचलिकता का एक रूप कहा जा सकता है। अगर फणीश्वरनाथ 'रेणु' को आंचलिक उपन्यासकार के तौर पर रेखांकित किया जाता है तो सिर्फ इसमें ही उनका व्यक्तित्व नहीं समाता। उनके लेखन में मानवीय रसप्रियता झलकती है जिसमें ग्राम्य भोलापन है। उनके लेखन से झलकता है कि वह सुधार के पक्षधर थे लेकिन इसके लिए वह नारे नहीं लगाते सिर्फ गांव के लोगों के मीठे झूठों को पकड़ते हैं। कहानियों में इनके पात्रों का अपना व्यक्तित्व होता है। कहानीकार का व्यक्तित्व लुप्तप्राय रहता है। अपने परिवेश से निर्मित व साथ में अपनी स्वतंत्र लक्षणशीलता व पहचान लिए ये पात्र अत्यंत सजीव व व्यक्तित्व संपन्न होकर उभरते हैं। फणीश्वरनाथ 'रेणु' आंचलिक कथाकार बाद में व कथाकार पहले हैं। आंचलिकता उनकी विशेषता है, सीमा नहीं। सही मायने में वे मानवीय अनुभूतियों व स्थितियों के चितेरे हैं। यह अलग बात है कि उनकी अधिकतर कहानियों के केन्द्र में अंचल रहा है, लेकिन मानवीय स्थितियाँ व उन स्थितियों से जुड़ी भावनाएँ भी इस केन्द्र के साथ महत्त्वपूर्ण रूप से संलग्न हो चलती हैं।

आँचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रख्यात साहित्यकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने 1936 के आसपास से कहानी लेखन की शुरूआत की थी। इनकी लेखन-शैली वर्णनात्मक थी जिसमें पात्र के प्रत्येक मनोवैज्ञानिक सोच का विवरण लुभावने तरीके से किया होता था। अपनी कहानियों और उपन्यासों में उन्होंने आंचलिक जीवन के हर धुन, हर गंध, हर लय, हर ताल, हर सुर, हर सुंदरता और हर कुरूपता को शब्दों में बांधने की सफल कोशिश की है। उनकी भाषा-शैली में एक जादुई सा असर है जो पाठकों को अपने साथ बांध कर रखता है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' एक अद्भुत किस्सागो थे और उनकी रचनाएँ पढ़ते हुए लगता है मानों कोई कहानी सुना रहा हो। ग्राम्य जीवन के लोकगीतों का उन्होंने अपने कथा साहित्य में बड़ा ही सृजनात्मक प्रयोग किया है। जब 'मैला आंचल' आया तो पहले उपन्यास के रूप में इसने सबको चकित कर दिया था। नामवर सिंह जी ने तब कहा था, 'पहले उपन्यास के रूप में इसकी परिपक्वता सचमुच चौंकाने वाली है।' पर धीरे-धीरे यह भेद खुला कि यह उनकी पहली कृति नहीं थी। वे चुपचाप और साहित्य की दुनिया से

एकदम किनारे रहते हुए पिछले दस वर्षों से कहानियां लिखे जा रहे थे। अपने अंचल को केन्द्र में रखकर कथानक को 'मैला आंचल' द्वारा प्रस्तुत करने के कारण फणीश्वरनाथ 'रेणु' हिन्दी में आंचलिक उपन्यास की परंपरा के प्रवर्तक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। यह हिन्दी का व भारतीय उपन्यास साहित्य का एक अत्यंत ही श्रेष्ठ उपन्यास है। इसकी यह शक्ति केवल इसकी आंचलिकता के कारण ही नहीं है, वरना एक ऐतिहासिक दौर के संक्रमण को आंचलिकता के परिवेश में चित्रित करने के कारण भी है। 'मैला आंचल' में इस अंचल का इतना गहरा और व्यापक चित्र खींचा है कि सचमुच यह उपन्यास हिन्दी में आंचलिक औपन्यासिक परंपरा की सर्वश्रेष्ठ कृति बन गया है। आज फणीश्वरनाथ 'रेणु' के नहीं होने के बाद भी जब हम उनकी रचनाओं को देखते हैं तो मनोविज्ञान पर उनकी पकड़, गांवों को देखने से ज्यादा जीने वाली प्रतिभा को लेकर चौंक पड़ते हैं। आज हमें फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कमी ज्यादा खलती है क्योंकि इस दौर में गांव पर लिखने वाले लेखकों की संख्या रोज-ब-रोज कम हो रही है। इसके उल्टे अनुपात में उनकी दुश्वारियां दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं। वे ग्रामीण दृश्यों का एक कोलाज सा रचते हैं। "जहाँ प्रेमचन्द में ग्रामीण चेतना स्पष्ट किस्सागोई का स्वरूप ग्रहण करती है और अर्थ-दर्शन का विस्फोट पात्रों की चारित्रिक टकराहट में होता है। युग-सापेक्षता की यह अनिवार्य शर्त थी कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' अपनी ग्रामीण संवेदना को एक 'शेप' देते-और जो शेप दी, वह आंचलिकता की सीमा के बावजूद पूरे देश की ग्रामीण चेतना का जीवित दस्तावेज बन गयी।"1

फणीश्वरनाथ 'रेणु' ग्रांमाचलों की हलचलों, ग्रामीणों की परिस्थितियों और उनकी मन:स्थितियों को सटीक ढंग से चित्रित करते हैं। ग्रामीण पात्रों का चित्रण इतना डूब कर करते हैं कि पाठक उनके पात्रों से एक रिश्ता-सा बना लेता है। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'तीसरी कसम' के हीरामन को ही लें, हीरामन का भोलापन, उस का मूक प्रणय, उस का आत्मदान सहसा अपनी ओर आप को आकर्षित कर लेता है। कहानी समाप्त होने के बाद भी आप उस के सम्मोहन में ही रहते हैं। हिंदी के उपन्यासों की एक खास बात उनका रोचक परिचय या भूमिका होती है, जैसा कि हमने 'गुनाहों का देवता' में भी देखा है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने 'मैला आँचल' की भूमिका में लिखा है-"यह है 'मैला आँचल', एक आँचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया।... मैंने इसके एक हिस्से के एक गाँव को, पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर, इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है।...इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी, मैं किसी से दामन बचा कर नहीं निकल पाया।" इस कथन से आँचलिकता स्वंयमेव प्रकाशित हो जाती है। उनके अनुसार अंचल विशेष की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक संरचना को दिखाना ही रचना को आँचलिक बनाता है। इससे एक गाँव या अंचल विशेष अपनी समग्रता में मुखरित होता है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने 'मैला आँचल' को आँचलिक उपन्यास कहा है और स्वयं को आँचलिक उपन्यासकार।

आंचलिक उपन्यास का नायक व्यक्ति विशेष न होकर अंचल होता है साथ ही आंचलिक उपन्यास में कथाओं का भंडार होता है। जिनका आपस में संबंध नहीं होता लेकिन आंचलिक जीवन को पुष्ट

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

करने के लिए वे आती हैं जैसे 'मैला-आँचल' में अनेक कथाएं हैं किन्तु प्रशान्त-कमली की कथा से किसी का कोई संबंध नहीं है। वह कथा आंचलिक जीवन को पुष्ट करने के लिए आई है। कैथरिन हेन्सन के अनुसार-"एक मानक परिभाषा के अनुसार आंचलिक उपन्यास में लेखक देश के किसी विशेष हिस्से पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है और उस भू-भाग के जीवन को इस तरह चित्रित करता है कि उस की अनूठी विशिष्टताएं, विशेष परम्पराएं और जीवन के ढांचे से पाठक पूरी तरह परिचित हो जाए।"3 यही कारण है कि 'जुलूस' आंचलिक उपन्यास है जबकि स्थानीय रंगत के बावजूद 'बिल्लेसुर बकरिहा' आंचलिक उपन्यास नहीं। मूलतः आंचलिकता लेखक द्वारा लेखन की वह शैली है जो किसी गाँव-शहर-कस्बे को उस की पूरी विशेषताओं के साथ चित्रित कर दे।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' को आंचलिक उपन्यासों का प्रवर्तक माना जाना समाचीन जान पड़ता है क्योंकि इस संबंध में फणीश्वरनाथ 'रेणु' का स्वयं का कथन है-"आंचलिक उपन्यास से मेरा आशय ऐसे उपन्यास से है जिस की समस्याओं को सामाजिक दृष्टिकोण से रेखांकित किया जा सकता है हालांकि उस में शिल्प-भावना के साथ परिवर्तित युग-परिस्थिति के फलस्वरूप जीवन-बोध में जो परिवर्तन आता है, उस का भी चित्रांकन किया जा सकता है। इस बारे में मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ कि उपन्यास जगत में इस धारा का प्रयोग मैंने ही पहली बार किया।"4

प्रश्न उठता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' को ही आंचलिक उपन्यासों में इतनी ख्याति क्यों मिली ? तो इस का सीधा-सा उत्तर यह है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने आंचलिकता के सभी उपादानों से लैस होकर या उस की समग्रता में पूरे अंचल को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' अपने आंचलिक साहित्य में आंचलिक भाषा या ग्रामीण भाषा का प्रयोग करते हुए साहित्य जगत में उतरे। इस का सबसे बड़ा कारण यही माना जा सकता है कि दृश्यों, पात्रों और परिवेश के सटीक सुस्पष्ट चित्रण के लिए यह जरूरी माना जाता है कि चीजें जैसी प्राकृत अवस्था में प्राप्त होती हैं, वह वैसे ही रूप में आएं। यदि वे उसी रूप में नहीं आतीं, तो उस में वह जीवंतता नहीं आती, जो किसी समर्थ रचनाकार की प्रामाणिकता का द्योतक है। वैसे भी फणीश्वरनाथ 'रेणु' की मान्यता है कि साहित्य का मूल स्रोत-जीवन और सहजता है, उसी में सौन्दर्य है। आंचलिक उपन्यास का प्रतिपाद्य ग्राम, वन, नगर, शहर कोई भी अंचल हो सकता है। जो लोग आंचलिकता को सीमाओं में बांध कर उसे अलग कर देना चाहते हैं- "वे भूल करते हैं। संस्कृति, रीति-रिवाज, लोक वाणी, इतिहास तथा प्राकृतिक दृश्यावली से मिलकर ही क्षेत्र-विशेष 'अंचल' बनता है।"5

फणीश्वरनाथ 'रेणु' कृत 'दीर्घतपा' आंचलिक उपन्यास होते हुए भी एक व्यापक धरातल पर लिखा गया है। इस की भूमिका में वे लिखते हैं- "यह उपन्यास नहीं, आचंलिक नहीं...हाँ आंचलिक ही...किन्तु अर्थात् यह उपन्यास, उपन्यास है।"6 इस उपन्यास में लेखक ने अपने पूर्व प्रकाशित दोनों उपन्यासों 'मैला आंचल' और 'परती परिकथा' के ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि से भिन्न शहरी जीवन की भूमि चुनी है। इस का घटना स्थल गाँव न होकर शहर है। उपन्यास का कथांचल है- बाकीपुर (पटना) का विमेन्स वेलफेयर बोर्ड, जिस की समाज सेवी संस्थाओं में

बड़ी प्रतिष्ठा है। इस के साथ ही एक वर्किंग विमेन्स होस्टल भी चलाया जा रहा है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी 'तीन बिन्दियाँ' को उनकी रचनाधर्मिता को समझने के एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में देखा जाता है। इस कहानी में ठुमरी गायिका मीताली की गायकी के द्वारा लोक-संवेदना को पिरोने का प्रयास किया है। मीताली अपनी ठुमरी में कीत्तन, भठियाली या पूर्वी का पुट देती है। मूल राग के साथ आँचलिक रागिनियों की झलकियाँ श्रोताओं का मन मोह लेती है। 'रसप्रिया' कहानी में लोक संस्कृति और आँचलिकता का गहरा रंग साफ-साफ दिखता है। मिरदंगिया को रसप्रिया के लिए जो प्यास है वह वास्तव में कहानीकार के मन में लोक संस्कृति की प्यास का सूचक है। मिरदंगिया लोक गीत को जीवित रखना चाहता है और इसलिए वह मोहना के तान पर अभिभूत हो जाता है। इस जमाने में भी इतनी शुद्ध रसप्रिया गानेवाला कहीं कोई है, और वह है मोहना। वह मोहना पर मन प्राणों से निछावर हो जाना चाहता है, क्योंकि वही उसकी परम्परा को बढ़ाने वाला भविष्य है। 'रसप्रिया' में फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने जगह-जगह पर लोकगीतों का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है। लोकगीत की इन पंक्तियों को कहानी के बीच में डालकर कहानी के सौन्दर्य को और भी निखार दिया है। ये पंक्तियाँ कहानी में अवरोध उत्पन्न नहीं करती बल्कि उसे आगे बढ़ाने में सहायता ही प्रदान करती है। आँचलिक रस्म रिवाज और संस्कृति को चित्रित करने में फणीश्वरनाथ 'रेणु' सफल रहे हैं।

निष्कर्ष

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का समय प्रेमचंद के ठीक बाद का है। इनका देश के आंचलिक कथाकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान है। आंचलिकता से तात्पर्य है कि किसी उपन्यास में किसी क्षेत्र के शब्दों और परम्पराओं का बहुतायत में पाया जाना। 'मैला आँचल' उपन्यास के द्वारा फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने पूरे भारत के ग्रामीण जीवन का चित्रण करने की कोशिश की है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' को जितनी प्रसिद्धि उपन्यासों से मिली, उतनी ही प्रसिद्धि उनको उनकी कहानियों से भी मिली। इनका सम्पूर्ण साहित्य राजनीति की मजबूत बुनियाद पर स्थित है। इन्होंने सामाजिक बदलाव में साहित्य की भूमिका को कभी राजनीति से कमतर नहीं माना। इनकी लेखन-शैली वर्णनात्मक थी जिसमें पात्र के प्रत्येक मनोवैज्ञानिक सोच का विवरण लुभावने तरीके से किया है। आंचलिक उपन्यास का नायक व्यक्ति विशेष न होकर अंचल होता है साथ ही आंचलिक उपन्यास में कथाओं का भंडार होता है। आँचलिक रस्म रिवाज और संस्कृति को चित्रित करने में फणीश्वरनाथ 'रेणु' सफल रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 डॉ.सियाराम तिवारी, रेणु कृतित्व और कृति, पृष्ठ 36

2 फणीश्वरनाथ 'रेणु', मैला आंचल, भूमिका

3 भारत यायावर, मैला आंचल, वाद-विवाद और संवाद, पष्ठ 194

4 भारत यायावर, रेणु रचनावली-4, पृष्ठ 388

5 भगवती प्रसाद शुक्ल, आंचलिकता से आधुनिकता का बोध, पृष्ठ 129

6 भारत यायावर, फणीश्वरनाथ 'रेणु' रचनावली, भाग-3, भूमिका से